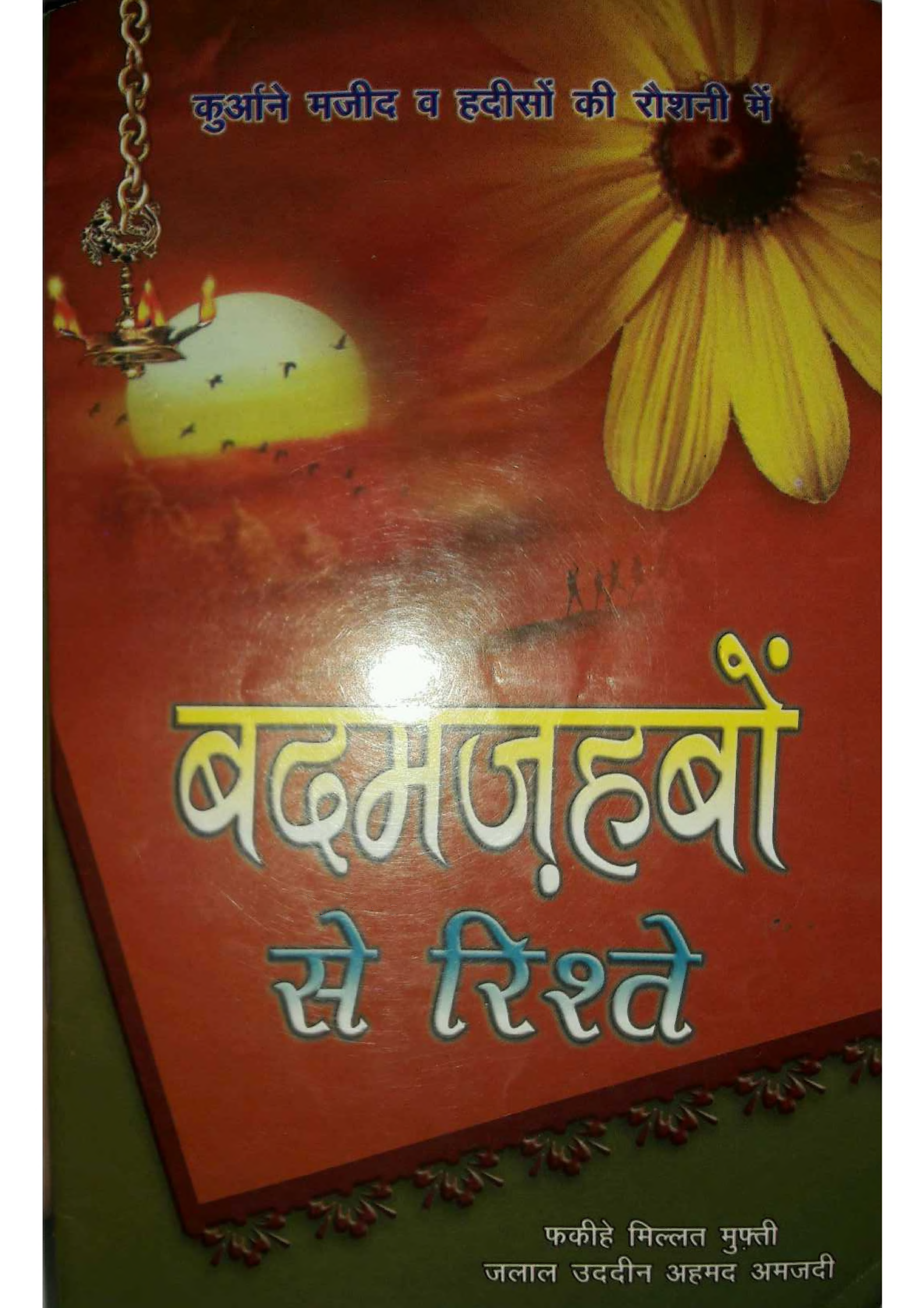


कुआने मजीद व हदीसों की रौशनी में



बदमाजहबों से रिश्ते

फकीहे मिल्लत मुफ्ती
जलाल उददीन अहमद अमजदी

कुर्आने मजीद व हदीसों की रौशनी में

बदमज़हबों से रिश्ते

लेखक

मुफ़ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी
दारुलऊलूम अमजदिया अरशदुलऊलूम
हैदरपुर ओझा गंज-बस्ती

हिन्दी कर्त्ता

मौलाना अनवार अहमद कादिरि अमजदी
हैदरपुर ओझागंज-बस्ती

मिलने का पता

कुतुब खाना अमजदिया
425, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली-6
फोन: 011-23243187-32484831

Rs. 20=00

इन्तिसाब

उन तमाम मुसलमानों के नाम जो
 अल्लाह व रसूल जल्ल जलालुहू व
 सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और
 सहाबये किराम व बुजुर्गाने दीन
 रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमईन
 से सच्ची मुहब्बत रखते हैं । और उनके
 दुश्मनों बदमज़हबों मुरतद्दों के यहाँ शादी
 विवाह करने से परहेज़ करते हैं ।

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

फ़िहरिस्ते माज़ामीन

नं.	मज़मून	पेज
1	बद मज़हब और हदीसें	5
2	हदीसों का खुलासा	6
3	मुरतद का हुक्म	7
4	अच्छी आदत	8
5	बहुत बड़ी बेवकूफी	11
6	मुरतदों से रिश्ते	16
7	शैतानी फ़रेब	18
8	बदमज़हब और मुरतद कौन	20
9	चकड़ालवी	21
10	कादियानी	22
11	राफ़िज़ी (शीआ)	22
12	ख़ारिजी	24
13	वहाबी देवबन्दी	25
14	वहाबी ग़ैर मुक़ल्लिद	27
15	तबलीगी जमाअत	28
16	मौदूदी जमाअत	28
17	सुल्ह कुल्ली	33
18	अल्लाह की लानत	33
19	हुज़ूर के रास्ते पर नहीं	34
20	सबसे कमज़ोर ईमान वाला	35
21	बुराई न रोकने पर अज़ाब	36
22	तरह तरह के फ़रेब (धोखे)	40

पहली नज़र

आज कल बहुत से गुमराह व बदमज़हब अहले सुन्नत व जमाअत से मेल जोल करके उनके यहाँ शादी विवाह करने की ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करते हैं ताकि उनको आसानी के साथ अपने जैसा अक्कीदा वाला बना सकें। और अवामे अहले सुन्नत अपनी बेवकूफी से उनके यहाँ रिश्ता कर लेते हैं। और इस तरह थोड़े ही दिनों में वह गुमराह व बदमज़हब होकर अल्लाह व रसूल और सहाबा व बुज़ुर्गाने दीन की बारगाह के गुसताख़ व बेअदब हो जाते हैं।

लिहाज़ा गुमराहों, बदमज़हबों और मुरतद्दों के साथ उठने बैठने और उनके यहाँ शादी विवाह करने के बारे में क़ुर्आन व हदीस का हुक्म अहले सुन्नत व जमाअत को बताने के लिए यह किताब लिख दी ताकि वह उनसे दूर रहें और उनके यहाँ विवाह करके अपने ईमान को ख़तरह में न डालें।

दुआ है कि खुदाये तआला अहले सुन्नत व जमाअत को इस किताब से सही रास्ता देखाए और उनको अम्बिया सहाबा और बुज़ुर्गाने दीन के दुश्मनों से हर तरह दूर रहने की तौफ़ीक़ बरख़शे। आमीन !

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

अल्लाह के नाम से शुरु जो रहमान व रहीम है

इन्सान दो तरह के होते हैं मुसलमान और काफिर—फिर काफिर भी दो तरह के होते हैं काफिरे असली और काफिरे मुरतद—काफिरे असली वह काफिरे है जो शुरु ही से कलमए इस्लाम को न मानता हो जैसे दहरिया, मजूसी, मुशरिक और यहूद व नसारा वगैरह। और काफिरे मुरतद भी दो तरह के होते हैं।

मुरतद मुजाहिर और मुरतद मुनाफिक

मुरतद मुजाहिर वह काफिर है कि जो पहले मुसलमान था फिर खुल्लम खुल्ला इस्लाम से फिर गया और कलमए लाइला-ह इल्लल्लाह का इन्कार करके दहरिया, मुशरिक, मजूसी या किताबी वगैरह कुछ भी हो गया।—

और मुरतद मुनाफिक वह काफिर है जो कलमए लाइलाह इल्लल्लाह अब भी पढ़ता है अपने आप को मुसलमान ही कहता है मगर खुदावनदे कुदूस, हुजूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि व सल्लम या किसी नबी की तौहीन करता है या दीगर जुरुरियाते दीन में से किसी बात का इन्कार करता है—काफिरों में सबसे बुरा यही मुरतद मुनाफिक है जो मुसलमान बनकर कुफ्र सिखाता है और अल्लाह व रसूल जल्ला जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को गालियाँ देता है। अल—अयाजु बिल्लाहि तआला— सहीह मुसलमान और गुमराह—सहीह मुसलमान वह है जो जुरुरियाते दीन को मानने के साथ—साथ तमाम

ज़ुरूरियाते अहले सुन्नत को भी मानता हो—और गुमराह मुसलमान वह बद मज़हब है जो ज़ुरूरियाते अहले सुन्नत में से किसी बात का इनकार करता हो मगर उसकी बदमज़हबी कुफ़्र की हद तक न पहुंची हो ।

बद मज़हब और हदीसों

वह मुसलमान जो बद मज़हब है उनके बारे में रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का हुक्म जानने के लिए इन हदीसों को पढ़ें ।

१. हज़रत अनस रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरवरे का इनात सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम किसी बदमज़हब को देखो तो उस के सामने गुस्सा जाहिर करो इस लिए कि खुदाए तआला हर बद मज़हब को दुश्मन रखता है । (इब्ने असाकिर)
२. हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि खुदाए तआला किसी बदमज़हब का न रोज़ाह क़बूल करता है न नमाज़ न ज़कात न हज़ न उमरह न जिहाद और न कोई नफ़ल न फ़र्ज़ बदमज़हब दीने इस्लाम से ऐसा निकल जाता है जैसा कि गूंधे हुए आटे से बाल निकल जाता है (इब्ने माज़ा)
३. हज़रत अबू उमामह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बदमज़हब दो ज़ख़ बालों के कुत्ते हैं (दार कुतनी)

४. हज़रत इबराहीमिबने मैसरह रज़ियल्लाहु तआला अ़नहु से रिवायत है कि रसूले क़सीम अ़लैहिस्सलातु वत्तसलीम ने फ़रमाया जिसने किसी बदमज़हब की इज़ज़त की तो उसने इस्लामके ढाने पर मदद की (मिशकात शरीफ)

बदमज़हब की इज़ज़त करने से इस्लाम के ढाने पर मदद कैसे हो जाएगी इस सुवाल का जवाब देते हुए हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुह़दिस देहलवी बुखारी अ़लैहिर्हमतु वर्रिज़वान तहरीर फरमाते हैं कि बदमज़हब की इज़ज़त करने में सुन्नत की तौहीन और उसकी बेइज़ज़ती है और सुन्नत की तौहीन इस्लाम की बुनियाद ढाने तक पहुंचा देती है ।
(अशेअतुल्लमआत जिल्द नं. 1 सफ़हा १४७)

५. हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अ़नहुसे रिवायत है कि रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसललम ने हुक्म फ़रमाया बदमज़हब अगर बीमार पड़े तो उनको देखने न जाओ । अगर मरजायें तो उनके जनाज़ह में शरीक न हो उनसे भेंट हो तो उनसे सलाम न करो उनके पास न बैठो उनके साथ पानी न पियो । उन के साथ खाना न खाओ । उनके साथ शादी विवाह न करो । उनके जनाज़ह की नमाज़ न पढ़ो ।

नोट: यह हदीस मुस्लिम, अबूदाऊद, इब्नेमाजा, उकैली और इब्ने हब्बान की रिवायतों का मज़मूआ है ।

हदीसों का खुलासह

इन तमाम हदीसों का खुलासह यह हुआ कि सारे मुसलमानों में बदमज़हब सब से ज़्यादा बुरे हैं उनसे अच्छे तरीका पर पेश आना जाइज़ नहीं कि खुदाए तआला उनको

दुश्मन रखता है और उनकी कोई इबादत नहीं क़बूल फ़रमाता है चाहे फ़ज़ हो या नफ़ल । वह जहन्नामियों के कुत्ते हैं । उन की इज़ज़त करना मज़हबे इस्लाम के ढ़ाने पर मदद करना है ।

इनका हर तरह से इसलामी बाईकाट किया जायेगा । यानि उन से किसी किस्म का मज़हबी तअल्लुक रखना जाइज़ नहीं । उनसे सलाम करना और उनके साथ उठना बैठना और खाना पीना जाइज़ नहीं और उनके यहाँ शादी विवाह करना जाइज़ नहीं । सरकारे अक्रदस सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम का यह तमाम हुक्म उन लोगों के बारे में है कि जो बदमज़हब तो हैं मगर उनकी बदमज़हबी कुफ़्र की हद को नहीं पहुँची है । रहे वह लोग जो कि मुरतद हैं तो उनके बारे में शरीअते इसलामिया का हुक्म बहुत सख्त है ।

मुरतद का हुक्म

वह मुरतद कि जो खुल्लम खुल्ला इस्लाम से फिर गया और लाइला-ह इल्लल्लाह का इनकार कर दिया उस के बारे में हुक्म यह है कि इसलाम का हाकिम उसे तीन दिन क़ैद में रखे फिर अगर वह तौबह करके मुसलमान हो जाय तो बेहतर वरना उसे क़त्ल कर दे । (दुर्रेमुखतार मअे शामी जिल्द ३ सफ़ा २८६)

और वह लोग जो कि अपने आप को मुसलमान ही कहते हैं और हमारी तरह नमाज़ व रोज़ह भी करते हैं

मगर अल्लाह के महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की या किसी दोसरे नबी की तौहीन करके मुरतद हो गये तो वह चाहे सुन्नीवरैलवी कहे जाते हों या वहाबी देवबन्दी-बादशाहे इस्लाम उनकी तौबह नही कबूल करेगा । यानी उन्हें क़त्ल कर देगा । फ़कीहे आज़म हिन्द-मुरशिदी हजरत सदरुश्शीअह रहमतुल्लाह अलैहि तहरीर फरताते हैं । मुरतद अगर-इरतिदाद से तौबह करले तो उसकी तौबह मक़बूल है मगर कुछ मुरतदीन जैसे किसी नबी की शान में गुसताखी करने वाला-कि उसकी तौबह मक़बूल नहीं तौबह क़बूल करनेसे मुराद यह है कि तौबह करन के बाद बादशाहे इस्लाम उसे क़त्ल न करेगा (ब्रहारे शरीअत जिल्द ९ सफ़हा १२७)

लेकिन नबी के गुसताख को क़त्ल करना चूँकि बादशाहे इस्लाम का काम है और यह हमारे यहाँ नहीं हो सकता तो अब मौजूदह सूरत में मुसलमानों पर यह लाजिम है कि ऐसे लोगों का मज़हबी बाइकाट करें उनका ज़बीहा न खाएं उन के यहाँ शादी विवाह न करें उनकी नमाज़ जनाज़ह न पढ़ें और न मुसलमानों के कबरस्तान में उन्हें दफ़न होने दें ।

अच्छी आदत

अल्लाह तआला और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दुश्मनों बदमज़हबों और मुरतदों का मज़हबी बाइकाट करना उनसे दूर रहना, उनके यहाँ शादी विवाह न करना और उनके साथ सखती से पेश आना

बद अखलाकी नहीं है बल्कि अच्छी आदतों में से है कि अल्लाह तआला और उस के प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हमको यही हुक्म फरमाया है । और हमारे बुजुर्गों ने हम को यही सबक दिया है कि बदमज़हबों और मुरतदों से दूर रहो उनके यहाँ रिश्ता नाता करना तो बड़ी बात है उन के साथ उठना बैठना भी पसंद न करो । अल्लाह तआला फरमाता है । और अगर शैतान तुम को भुला दे तो याद आने के बाद ज़ालिम कौम के पास न बैठो (पारा रुकूअ १४)

और अल्लाह तआला फरमाता है । और जालिमों की तरफ न झुको कि तुम्हें जहन्नम की आग छुयेगी । (पारह २१ रुकूअ १०)

और बद मजहबों के बारे में अच्छी आदत सिखाने वाले नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की पाँच हृदीसों आप पहले पढ़ चुके हैं । इस जगह पर मुस्लिम शरीफ की एक हृदीस और पढ़ें । सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया ।

उनसे दूर रहो और उन्हें अपने से दूर रखो कहीं वह तुम्हें गुमराह न कर दें । कहीं वह तुम्हें फितना में न डाल दें ।

और इमामे रब्बानी मुजदिदे अलफे सानी हज़रत शैख अहमद सरहिन्दी रहमतुल्लाह अलैहि लिखते हैं : “अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से फरमाया कि कुफ़ वालों पर सख्ती करो । तो रसूले खुदा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम

जो कि अच्छी आदत वाले हैं। उनको सख्ती करने के हुक्म फरमाने से मालूम हुआ कि कुफ्र वालों के साथ सख्ती से पेश आना अच्छी आदत में दाखिल है।

खुदा के दुश्मनों को कुत्ते की तरह दूर रखखा जाये। उनके साथ दोस्ती व महबूबत अल्लाह और उस के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की दुश्मनी तक पहुंचा देती है। (कलमह व नमाज़ के सबब) आदमी समझता है कि वह मुसलमान है अल्लाह और रसूल पर ईमान रखता है (इसलिए उनसे दोस्ती और रिश्ता करता है) लेकिन वह यह नहीं जानता कि इस तरह की बेहूदा हरकतें उसके इस्लाम को बरबाद कर देती हैं (मकतूब न. १६३)

और आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरैलवी रहमतुल्लहि तआला अलैहि फरमाते हैं कि "अमीरुल मूमिनीन उमर फारुके आजम रजियल्लाहु तआला अनहु ने मस्जिदे अक़दस नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में नमाज़े मगरिब के बाद किसी मुसाफिर को भूका पाया। अपने साथ काशानये खिलाफत में ले आये। उसके लिए खाना मंगाया। जब वह खाना खाने बैठा कोई बात बदमज़हबी की उससे जाहिर हुई। फौरन हुक्म हुआ खाना उठा लिया जाये और इसे बाहर निकाल दिया जाये। सामने से खाना उठवा लिया और उसे निकलवा दिया (अलमलफूज़ जिल्द १ सफा न. ९४)

बदमज़हबों और मुरतदों से दूर रहने और उन को अपने से दूर रखने का हुक्म इसलिए है कि उनसे मेल जोल रखने और उनके पास उठने बैठने से काफिर होकर मरने

का खतरा है। फतावा रज़विया दसवां हिस्सा सफहा ५७५ में है कि इमाम जलालुद्दीन सियूती रहमतुल्लाहि तआला अलैहि शरहुस्सुदूर में फरमाते हैं कि एक शख्सराफजियों (शीओं) के पास बैठा करता था। उसके मरते वक़्त लोगों ने उसे कलमए तैयबह की तलक्कीन की उस ने कहा नहीं कहा जाता। पूछा कियुं कहा यह दो शख्स खड़े हैं। यह कहते हैं तू उनके पास बैठा करता था जो अबूबकर व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को बुरा कहते थे अब चाहता है कलमह पढ़ कर उठे न पढ़ने देंगे—जब सिद्दीके अकबर व फारूके आजम रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को बुरा कहने वालों के पास बैठने वालों की यह हालत है तो जो लोग अल्लाह तआला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बुरा कहते हैं उनकी शान घटाते हैं। और उन्हें तरह तरह के ऐब लगाते हैं। उनके पास बैठनेवालों को कलमह नसीब होना और भी कठिन है।

और जब ऐसे लोगों के पास बैठने वालों को कलमह नसीब होना कठिन है तो जो लोग उनके यहाँ शादी विवाह करके दोस्ती व महब्बत का मजबूत क़िला बनाते हैं उन को कलमह नसीब होना और ज़ियादह कठिन है। खुदाए तआला ऐसे लोगों को ईमान की महब्बत अता फ़रमाए। आमीन।

बहुत बड़ी बेवक़ूफी

बहुत से लोग अपनी बेवक़ूफी से यह समझते हैं कि

जो आदमी मुसलमान के घर पैदा हुआ और उसका नाम मुसलमानों की तरह है तो वह चाहे जैसा अक्कीदा रखे और अल्लाह व रसूल की शान में जो चाहे बके सच्चा पक्का मुसलमान ही रहेगा बदमज़हब व गुमराह और काफिर व मुरतद नहीं होगा । तो यह बहुत बड़ी बेवकूफी है ।

इब्ने जरीर, तबरानी, अबुशैख और इब्ने मरदवीयह रईसुल मुफस्सरीन हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अ़नहुमा से रिवायत करते हैं कि कुछ लोग रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की शान में बेअदबी का लफज़ बोले ।

हुज़ूर ने उनसे पूछा तो उन लोगों ने कसम खाई कि हम ने कोई कलमह हुज़ूर की शान में बेअदबी का नहीं कहा है । उस पर यह आयत अल्लाह तआला की तरफ से उतरी । : खुदा की कसम खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा । और बेशक ज़रूर उन्होंने कुफ़ की बात कही और इसलाम में आने के बाद काफिर हो गये । (पारह १० रुकूअ १६)

देखिए अल्लाह तआला ने खुल्लम खुल्ला फरमाया कि वह लोग मुसलमान थे कलमा पढ़ने वाले थे और नमाज़ व रोज़ह करने वाले थे मगर हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की शान में बेअदबी का लफज़ बोलने के सबब काफिर हो गये मुसलमान नहीं रह गये ।

और इब्ने अबी शैबा, इब्नुल मुनज़िर, इब्ने अबी हातिम और अबुशैख हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु तआला अ़नहु के शगिरदे खास हज़रत इमाम

मुजाहिद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत करते हैं कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक शरूस की ऊंटनी जो ग़ायब हो गई थी उस के बारे में फरमाया कि वह फ़लों जंगल में है उस पर एक आदमी ने कहा उन को ग़ैब की क्या खबर ? हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उस आदमी को बुला कर पूछा तो उस ने कहा हम तो ऐसे ही हँसी मज़ाक़ कर रहे थे। उस पर यह आयत अल्लाह की तरफ़ से उतरी। “और अगर तुम उनसे पूछो तो बेशक वह ज़ुरुर कहेंगे कि हम तो यँ ही हँसी खेल में थे तुम फरमादो क्या अल्लाह उसकी आयतों और उस के रसूल से ठग़ा करते थे ? बहाने न बनाओ अपने ईमान के बाद तुम काफिर हो गये।” (पारह १० रुकूअ १४)

इस आयत में भी खुललम खुल्ला फरमाया गया कि कुफ़्र का कलमा जबान से निकालने के सबब मोमिन होने के बाद काफिर हो गए। लेहाज़ा यह समझना बहुत बड़ी बेवक़ूफी है कि मुसलमान अल्लाह व रसूल की तौहीन करे तो भी वह मुसलमान ही रहेगा काफिर नहीं होगा।

और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इनतिक़ाल फरमाने पर कुछ लोगों ने कहा हम कलमा व नमाज़ पढ़ेंगे और सब कुछ करेंगे मगर ज़कात नहीं देंगे। यानी ज़कात के फ़र्ज होने का अक़ीदा जो दीन की ज़ुरुरी बातों में से है। उस का इन्कार कर दिया तो कलम व नमाज़ पढ़ना उन्हें कुछ काम न आया और वह मुरतद हो गये। जैसा कि हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहदिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने लिखा

—मुसैलमा के साथी और ज़कात के फज़ का इन्कार करने वाले मुरतद हुए। (अशिशतुल लमआत जिल्द १ पेज न.८३)

और अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बड़ाई का अक्कीदा दीन की अहम तुरुरी बातों में से है। लिहाज़ा जो लोग हुज़ूर की तौहीन व बेअदबी कर के उनकी बड़ाई नहीं मानते हैं वह ज़ुरुर मुरतद हैं कलमह और नमाज़ उन्हें मुरतद होने से नहीं बचा सकेगा।

और हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहु तआला अउनु से रिवायत है। वह फरमाते हैं कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाशिर थे और हुज़ूर माले ग़नीमत बाँट रहे थे कि तुलखुवैसरा नाम का एक आदमी जो कबीला बनी तमीम का रहने वाला था आया और कहा ऐ अल्लाह के रसूल इन्साफ से काम लो। हुज़ूर ने फरमाया तेरी दिलेरी पर अफसोस मैं ही इन्साफ नहीं करूंगा तो और कौन इन्साफ करने वाला है। अगर मैं इन्साफ न करता तो तू घाटे में हो चुका होता। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु तआला अउनु ने अज़ा किया या रसूलल्लाह मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं इस की गर्दन मार दूँ तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया

—इसे छोड़ दो। इस के बहुत साथी हैं जिन की नमाज़ों और रोज़ों को देखकर तुम अपनी नमाज़ों और रोज़ों को हकीर समझोगे। वह क़ुआन पढ़ें

गे मगर कुर्आन उनके हलक से नहीं उतरेगा (इन देखावटी खूबियों के बावजूद) वह दीन से ऐसे निकले होंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है । (बुखारी शरीफ जिल्द सफहा ५०९)

और हज़रत अबूसईद खुदरी व अनस इबने मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया—अनक़रीब मेरी उम्मत में इखतिलाफ व इफतिराक पाया जाए गा एक गिरोह निकले गा जो अच्छी बातें करे गा लेकिन उनका अमल खराब होगा । वह कुर्आन पढ़ेंगे मगर कुर्आन उनके हलक के नीचे नहीं उतरेगा । वह दीन से ऐसे निकल जायेंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है । (मिशकात शरीफ सफहा ३०८)

इन हदीसों से मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के फरमाने के मुताबिक बहुत से लोग ऐसे होंगे जिन की नमाज़ और रोज़ों के सामने मुसलमान अपनी नमाज़ और रोज़ों को हकीर समझेंगे । वह लोग कुर्आन भी पढ़ेंगे मगर इसके बावजूद वह दीन से निकले हुए होंगे । जब वह अहले सुननत या दीन की ज़रूरी बातों में से किसी बात का इन्कार करेंगे तो नमाज़ व रोज़ह और कुर्आन का पढ़ना उन्हें बदमज़हब और मुरतद होने से नहीं बचा सके गा ।

मुरतदों से रिश्ते

अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और औलियाए किराम व बुजुर्गाने दीन की शान में बेअदबी करने वाला मुरतद अहले सुन्नत व जमाअत के यहाँ शादी विवाह करने की ज्यादा कोशिश करता है इसलिए कि इस तरह वह अपने रिश्तेदारों को बेदीन बनाने में आसानी के साथ कामयाब हो जाता है। और सिर्फ नाम का सुन्नी अल्लाह व रसूल और बुजुर्गाने दीन की महबूबत का झूठा दावे दार उन के दुश्मनों के यहाँ रिश्ता कर लेता है हालांकि उन के साथ शादी करना जिनाकारी का दरवाजा खोलना है इसलिए कि मुरतद के साथ निकाह जाइज ही नहीं होता जैसा कि फ़तावा आलमगीरी जिल्द अब्बल मिसरी सफ़हा २६३ में है “मुरतद का निकाह मुरतदा मुस्लिमह (मुसलमान व मुरतद औरत) और काफिरह असलियह (वह औरत जो असली काफिर हो) किसी से जाइज नहीं ऐसा ही मुरतदह का निकाह किसी से नहीं हो सकता। इसी तरह इमाम मुहम्मद अलैहिर्रहमत व रिज़वान की किताब मबसूत में है।

हेरत है कि सुन्नी अपने बाप दादा के दुश्मनों से रिश्ता नहीं करता मगर अल्लाह व रसूल और बुजुर्गाने दीन के दुश्मनों के यहाँ शादी विवाह करने में कोई रुकावट नहीं महसूस करता। और जब उनके यहाँ रिश्ता करने से मना किया जाता है तो कहता है कि अब वह ज़माना नहीं रहा कि उन के यहाँ शादी करने से रोका जाये।

ऐसे लोग जब तरक्की करेंगे तो गैर कौमों के यहाँ रिश्ता करने से भी इनको कोई एतिराज़ न होगा जैसा कि आजकल कुछ नाम निहाद तरक्की वाले मुसलमान गैर मुस्लिमों के यहाँ शादी करने लगे हैं।

और फिर ऐसे लोग जब और भी तरक्की कर जायेंगे तो अपनी बहन बेटी को भी बीवी बनाकर रख लेने में उनको कोई रुकावट नहीं होगी। और जब मना किया जाएगा तो यही कहेंगे कि अब वह जमाना नहीं रहा। जैसा कि कुछ तरक्की वाले मुल्क के लोग बहन और बेटी को बीवी बनाकर रखने लगे हैं। खुदा की पनाह

कुछ जाहिल गँवार कहते हैं कि लड़की लाने में कोई हर्ज नहीं अलबत्ता उनको लड़की दना गलत है। हालाँकि लड़की हो या लड़का किसी का रिश्ता उनसे करना जाइज़ नहीं जैसा कि फतावा आलम गीरी के हवाला से अभी गुज़रा।

और फिर लड़की देने में तो सिर्फ़ एक लड़का को मुरतद के हवाले करना है। और मुरतद की लड़की लाने में अपने लड़के और उसकी औलाद को मुरतद होने के रास्ते पर खड़ा करना है इस लिए कि अकसर यही होता है कि जिस सुन्नी लड़का की बीवी मुरतद के यहाँ से लाई गई कुछ दिनों के बाद वह बहकी बहकी बातें करने लगता है। और उसकी औलाद नानी नाना का असर कबूल कर लेती है। मुरतद का ज़वह किया हुआ मुरदारी खाती है, उन्हीं का तौर व तरीका इखतियार करती है यहाँ तक कि कुछ दिनों बाद वह वक़्त आ जाता है कि पूरा घर बेदीन हो जाता है।

खुलासा यह कि मुरतद की लड़की लाना उनको लड़की देने से ज्यादा खतरनाक है कि इस तरह सुन्नियत को ज्यादा नुकसान पहुँचता है ।

शैतानी फरेब

जब कोई नाम निहाद सुन्नी किसी मुरतद के यहाँ रिश्ता करना चाहता है तो दुनियादार मौलवी शैतानी फरेब से काम लेता है यानी तौबा कराके निकाह पढ़ा देता है और पैसे लेकर अपना रास्ता पकड़ता है । और तौबा करनेवाला मुरतद पहले की तरह अपने पुराने तरीके पर रहता है ।

इसी लिए शरीअत का यह हुक्म है कि तौबा के बाद फौरन उस के साथ निकाह नहीं किया जायेगा बल्कि कुछ दिनों उसे देखा जायेगा कि अपने तौबा पर वह क़ाइम है या नहीं ? जैसे कोई फ़ासिक़े मोअलिन तौबा करले तो फौरन उसे इमाम नहीं बना दिया जायेगा । फ़तावा रज़विया जिल्द ३ सफ़्हा 213 में है कि फ़तावा क़ाज़ी ख़ाँ फिर फ़तावा आलमगीरी में है कि “फ़ासिक़ तौबा करले तब भी उसकी गवाही नहीं कबूल की जाएगी जब तक कि इतना वक़्त न गुज़र जाये कि उस पर तौबा का असर ज़ाहिर हो । ”

और आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत फ़ाजिले बरैलवी रज़ियल्लाहु तआला अन्हू लिखते हैं कि “अमीरुल मोमिनीन गैजुल मोनाफ़िक़ीन इमामुल आदिलीन सय्यिदना उमर फ़ारुक़े आजम रज़ियल्लाहु

तअाला अन्हु ने जब "सुबैग" से जिस पर बवज्हे बहसे मुतशाबिहात बद मज़हबी का अनदेशह था बाद ज़रबे शदीद तौबा ली। अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु तअाला अन्हु को फ़रमान भेजा कि मुसलमान उस के पास न बैठें, उसके साथ खरीद व फ़रोख्त न करें, बीमार पड़े तो उस की अयादत को न ज़ाएँ और मर जाए तो उसके जनाज़ा पर हाज़िर न हों।

बतअमीले हुक्मे अहकम इस बड़े हुक्म के मानने के साथ) एक मुद्दत तक यह हाल रहा कि अगर सौ आदमी बैठे होते और वह आता सब मुतफर्रिक (तितर बितर) हो जाते। जब अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु तअाला अन्हु ने अरज़ी भेजी कि अब उस का हाल अच्छा हो गया। उस वक़्त इजाज़त फरमाई (फतावा रज़विया जिल्द ३ सफ़हा न. 213)

आला हज़रत ने इस वाक़ेआ के सुबूत में पाँच हदीसों को नक़ल फरमाया है।

देखिए "सुबैग" सिर्फ़ आयाते मुतशाबिहात यानी वजहुल्लाह और यदुल्लाह के मिस्ल में बहस किया करता था वह मुरतद नहीं था बल्कि सिर्फ़ उस के बदमज़हब होने का डर था मगर उस के बावजूद हज़रते उमर फ़ारुके आजम रज़ियल्लाहु तअाला अन्हु ने तौबा के बाद भी उस का सख्त बाईकाट किया जबतक कि इतमिनान नहीं हो गया।

लेहाजा मुरतद और बदमज़हब को तौबा कराने के बाद बदर्जए औला (ज़ुरुर) कई बरस तक देखा

जायेगा। जब उस की बात चीत और तौर तरीका से खूब इतमिनान हो जाए कि वह अहले सुन्नत व जमाअत का आदमी हो गया तब उस के साथ निकाह किया जायेगा वना नहीं।—लिहाजा जो शरूस मूरतद या मूरतदह को तौबा कराने के बाद फौरन उन के साथ अपने लड़का लड़की का विवाह करे या जो मौलवी ऐसा निकाह पढ़े मुसलमानों को चाहिए कि इन दोनों का मज़हबी बाईकाट करें और ऐसे दुनियादार मौलवी के पीछे नमाज़ न पढ़ें।—

बदमज़हब और मूरतद कौन ?

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया “आखिरी ज़माना में कुछ लोग फ़रेब देने वाले और झूट बोलने वाले होंगे। वह तुम्हारे सामने ऐसी बातें लायेंगे जिन को न तुम ने कभी सुना होगा न तुम्हारे बाप दादा ने। तो ऐसे लोगों से बचो और उन्हें अपने करीब न आने दो ताकि वह तुम्हें गुमराह न कर दें और न फ़ितना में डालें।” (मुस्लिम, मिशकात सफ़हा न 28)

हज़रत शैख अब्दुल हक़ मुहदिस देहलवी बुखारी रज़ियल्लाहु तआला अन्हु इस हदीस शरीफ़ की शरह में लिखते हैं “यानी बहुत लोग होंगे जो मक्कारी व फ़रेब से उलमा, मशाइख और सुलहा बनकर अपने को

मुसलमान का खैर ख्वाह और मुस्लेह (ठीक रास्ता बताने वाला) जाहिर करें गे ताकि अपनी झूटी बातें फैलायें और लोगों को अपने बातिल अक्रीदों और फ़ासिद खियालों की तरफ़ बुलायें” -
(अशिअतुल्लमआत जिल्द १ सफ़हा न. १३३)

इस हदीस शरीफ़ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आखिरी ज़माना में जिन फ़रेब देने वालों और झूट बोलने वालों के पैदा होने की खबर दी थी इस ज़माना में उन के कई गिरोह पाये जाते हैं जो मुसलमानों के सामने ऐसी बातें बयान करते हैं कि उन के बाप दादा ने कभी नहीं सुना है यही लोग बदमज़हब और मुरतद हैं । जिन में से चन्द यह हैं ।

चकड़ालवी

यह गिरोह अपने आप को अहले कुर्आन कहता है। उन का अक्रीदा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम सिर्फ़ एलची हैं और बस। खुल्लम खुल्ला सारी हदीसों का इन्कार करता है यानी अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की फ़रमाँबरदारी को नहीं मानता। यह वह बातें हैं जिन को हमारे बाप दादा ने कभी नहीं सुना था बल्कि उन को खुदाए तआला ने यह हुक्म दिया है कि ऐ ईमान वालो अल्लाह की फ़रमाँबरदारी करो और रसूल की फ़रमाँबरदारी करो (पारह ९ रुकूअ ९)

कादियानी

यह लोग मिरज़ा गुलाम अहमद को मेंहदी, नबी और रसूल मानते हैं। हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बाद दूसरे नबी का पैदा होना जाइज़ ठहराते हैं। यह वह बातें हैं जिन को हमारे बाप दादा ने कभी नहीं सुना था। अल्लाह तआला ने उन से फ़रमाया था कि “मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुम मदों में से किसी के बाप नहीं और लेकिन अल्लाह के रसूल और खातमुन्नबीईन हैं” (पारह 22 रुकूअ 2)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन्हें बताया था “मैं खातमुल अमबिया (आखिरी नबी) हूँ मेरे बाद कोई नया नबी नहीं होगा”। (मिशकात शरीफ़ सफ़हा 465)

यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर नबियों के पैदा होने का सिलसिला ख़त्म हो गया आप ने नुबूवत के दरवाज़ा पर मुहर लगा दी। अब आप के बाद कोई नबी हरगिज़ नहीं पैदा होगा।

राफ़िज़ी (शीआ)

यह गिरोह अपने आप को शीआ कहता है यह लोग हज़रत अबू बकर सिद्दीक़, हज़रत उमर फारुकेआज़म, हज़रत उस्माने ग़नी और बहुत से सहाबा रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमअीन को बुरा भला कहते हैं और उन को खुल्लम खुल्ला गालियाँ देते हैं।— यह वह बातें हैं जिनको हमारे बाप दादा ने कभी नहीं सुना था। उन को क़ुर्आन ने यह बताया था कि “खुदाए तआला ने

सारे सहाबा से भलाई का वादा फ़रमाया है ” यानी जन्नत का (पारह २७ रकूअ १७)

और क़ुर्आन ने उनसे यह इरशाद फ़रमाया था कि “अल्लाह तआला सहाबा से राज़ी है और वह अल्लाह से राज़ी हैं । खुदाए तआला ने उन के लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिन के नीचे नहरें जारी हैं । वह लोग उन में हमेशा रहेंगे यही बहुत बड़ी कामयाबी है” (पारह ११ रकूअ १)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन को यह हुक्म दिया था कि मेरे सहाबा की इज़ाज़त करो इस लिए कि वह तुम से बेहतर हैं “ (मिशकात शरीफ़ सफ़हा न. ५५४)

और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन से यह फ़रमाया था कि “मेरे सहाबा के बारे में अल्लाह तआला से डरो । अल्लाह तआला से डरो । मेरे बाद उन्हें एतिराज़ का निशाना न बनाना” (तिरमिज़ी मिशकात सफ़हा ५५४)

और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन्हें यह हुक्म फ़रमाया था कि “मेरे सहाबा को गाली न दो ।” (बुखारी, मुस्लिम मिशकात सफ़हा न. ५५३)

राफ़ज़ी सहाबा को गालियाँ देने के इलावह और भी बहुत से कुफ़्री अक्कीदे रखते हैं यहाँ तक कि उन में के कुछ फिरक़े हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को खुदा करार देते हैं । तफ़सील के लिए तुहफ़ए इस्ना

अशरिय्यह देखें ।-

खारिजी

इस गिरोह को यज़ीदी भी कहा जाता है। यह लोग हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बुरा भला कहते हैं। रसूल के निवासे हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को बागी करार देते हैं। और उन की शान में तरह तरह की बेअदबी करते हैं।

और यज़ीद जिस ने कअबए मुअज़ज़मह और रौज़ए मुनौवरा की सख़त वेहुरमती की मस्जिदे नबवी में घोड़े बंधवाए जिन की लीद और पेशाब मिम्बरे अक्रदस पर पड़े, हजारों सहाबा और ताबिईन को बेगुनाह शहीद किया। मदीना तय्यबह की पाक दामन पारसा औरतों को तीन रोज़ अपने खबीस लशकर पर हलाल किया और जिगर पारए रसूल फ़रज़न्दे बतूल हज़रत इमाम हुसैन रज़ियल्लाहु तआला अन्हु को तीन दिन बे आब व दाना (दाना और पानी के बग़ैर) रख कर मैदाने करबला में प्यासा ज़बह किया और फिर शहादत के बाद उनके जिस्म पर घोड़े दौड़ाये गये यहाँ तक कि उनकी हड्डियाँ चकना चूर हो गईं। (देखिए फ़तावा रज़विय्यह जिल्द न. 6 सफ़हा 107) मगर जिस ने यह सब कुछ किया ऐसे यज़ीद खबीस को यह खारजी जन्नती करार देते हैं और उसे अमीरुल मूमिनीन (मुसलमानों का चुना हाकिम) व रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं।

नोट :- यज़ीद के जन्नती होने के बारे में खारिजी यज़ीदी जो बुखारी शरीफ़ की हदीस पेश करते हैं उस का

जवाब हमारी किताब खुतबाते मुहर्रम सफ़हा 345 पर देखें । अलअमजदी

वहाबी देव बन्दी

इस गिरोह का अक़ीदा यह है कि जैसा इल्म हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम को हासिल है ऐसा इल्म तो बच्चों पागलों और जानवरों को भी है। जैसा कि देवबन्दियों के पेशवा (अगुवा) मौलवी अशरफ़ अली थानवी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के लिए कुल इल्मे ग़ैब का इन्कार करते हुए सिर्फ़ कुछ इल्मे ग़ैब को साबित किया फिर कुछ इल्मे ग़ैब के बारे में यूँ लिखा कि “इस में हुज़ूर की क्या तख़सीस है ऐसा इल्म तो ज़ैद वअमर बल्कि हर सबी व मजनून बल्कि जमीअ हैवानात व बहाइम के लिए भी हासिल है” (हिफ़्जुलईमान सफ़हा न. ८)

नोट :— नये एडीशन में यह इबारत कुछ बदल दी गई है लेकिन सारे वहाबी देवबन्दी उसी पुरानी इबारत को सहीह मानते हैं लिहजा सिर्फ़ इबारत बदलने से उनका कुफ़्र नहीं उठ जायेगा ।

इस गिरोह का एक अक़ीदह यह भी है कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी नहीं हैं । आप के बाद दूसरा नबी हो सकता है जैसा कि मौलवी क़ासिम नानोतवी दारुल ऊलूम देवबन्द की बुनियाद रखने वाले ने लिखा है कि “अवाम के खयाल मे तो रसूलुल्लाह का खातम होना बर्यी मअना है कि आप का ज़माना अम्बियाये साबिक़ के ज़माने

के बाद और आप सब में आखिरी नबी हैं मगर अहले फ़हम पर रोशन होगा कि तक्रहुम या तअख़खुर ज़माना में बिज़्ज़ात कुछ फ़ज़ीलत नहीं" (तहज़ीरुन्नास सफ़हा न. 3)

इस एबारत (लेख) का खुलासा यह है कि खातमुन्नबीईन का यह मतलब समझना कि आप सब में आखिरी नबी हैं यह ना समझ और गंवारों का खयाल है ।

और आगे फिर यूँ लिखा कि "अगर बिल फ़र्ज बाद ज़मानए नबवी सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम कोई नबी पैदा हो तो फिर भी खातमिय्यते मुहम्मदी में कुछ फ़र्क न आएगा" (तहज़ीरुन्नास सफ़हा न. 28)

इस इबारत का खुलासा यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के बाद दूसरा नबी पैदा हो सकता है। खुदा की पनाह

इस गिरोह का एक अक़ीदा यह भी है कि शैतान व मलकुलमौत के इल्म से हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम का इल्म कम है । जो शख़्स शैतान व मल कुलमौत के लिए बहुत इल्म माने वह मोमिन मुसलमान है लेकिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तअ़ाला अलैहि वसल्लम के इल्म को बहुत ज़्यादा मानने वाला मुशरिक बेईमान है जैसा कि इस गिरोह के पेशवा मौलवी खलील अहमद अम्बेठी ने लिखा कि "शैतान व मलकुलमौत को यह उसअत नस से साबित हुई फ़ख़रे आलम के उसअते इल्म की कौन सी नरसे क़तई है जिस से तमाम

नुसूस को रद्द करके एक शिर्क साबित करता है ।”
(बराहीने क्रातिआ सफ़हा न. 51)

और इन लोगों का एक अकीदा यह भी है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मर कर मिट्टी में मिल गए जैसा कि तक्रवियतुल ईमान सफ़हा 79 पर है ।

ऊपर लिखे गये अक्रीदों के इलावा और भी इस गिरोह के बहुत से कुफ़्र वाले अकीदे हैं । इस लिए मक्का मुअज़्जमा मदीना तैयबह, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, बर्मा और बंगलादेश के सैकड़ों आलिमों और मुफ़तियों ने इन लोगों के काफ़िर व मुरतद होने का फ़तवा दिया है । तफ़सीली मालूमात के लिए फ़तावा हुसामुल हरमैन और अस्सवारिमुल हिन्दियह को पढ़ें ।

वहाबी गैर मुक़दिलद

यह गिरोह अपने आप को अहले हदीस कहलाता है जो वहाबियों देव बन्दियों की एक शाख है । उनके तमाम कुफ़्र में शरीक है और यह लोग हज़रत इमाम आजम अबू हनीफ़ा और हज़रत इमाम शफ़िई वग़ैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम को बुरा भला कहते हैं ।

और इन लोगों का एक अक्रीदा यह भी है कि हज़रत ग़ौसे आजम शैष अब्दुल क़ादिर जीलानी, हज़रत ख्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी, हज़रत कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी, हज़रत फ़रीदुद्दीन गंज शकर, हज़रत महबूबे इलाही निज़ामुद्दीन औलिया, हज़रत मख़दूम अशरफ़ जहांगीर सम्नानी कछौछवी हज़रत इमाम ख़वानी शैख

अहमद सरहिन्दी मुजद्दिद अल्फ्रे सानी हजरत शैख अब्दुल हक मुहादिस देहलवी बुखारी और हजरत मखदूम महाइमी वगैरा सभी बुजुर्गानेदीन रिजवानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमअीन गुमराह व बद मजहब थे इसलिए कि यह सब के सब मुकललिद थे और किसी इमाम की तक्लीद उनके नजदीक गुमराही व बद मजहबी है।

तबलीगी जमाअत

इस गिरोह के भी सारे अक्तीदे वही हैं जो वहाबियों देव बन्दियों के हैं। मगर यह लोग अहले सुन्नत व जमाअत को अपने जैसा अक्तीदह वाला बनाने के लिए फरेब से सिर्फ कलमह व नमाज का नाम लेते हैं। और जब कोई सुन्नी धोके से उन की जमाअत में शामिल होकर उनके जाहिरी अमल का असर कबूल कर लेता है तो फिर यह लोग आसानी के साथ उसे पक्का वहाबी देव बन्दी बनाकर अल्लाह और उस के रसूल की बारगाह का बेअदब बना लेते हैं।

मौदूदी जमाअत

यह गिरोह अपने आप को जमाअते इस्लामी कहलाता है। यह भी वहाबियों देव बन्दियों की एक शाख है यानी बुनयादी तौर पर दोनों एक हैं। इसके इलावा इस जमाअत को बनाने वाले अबुल आला मौदूदी ने तमाम नबी खास कर हजरत नूह अलैहिस्सलाम, हजरत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, हजरत मूसा अलैहिस्सलाम, हजरत दाऊद अलैहिस्सलाम और हजरत यूनस अलैहिस्सलाम यहाँ तक की सारे नबियों के सरदार

हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की शान में बेअदबी की है ।

और तमाम सहाबा खास कर हजरत अबू बकर सिद्दीक, हजरत उमर फारुक, हजरत उस्मान गनी, और हजरत खालिद इब्ने वलीद रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम पर नुक़ता चीनी करके उन की तौहीन की है। और राफ़िज़ीयों (शीओ) को खुश करने के लिए वही लिखने वाले हुज़ूर के सहाबी हजरत अमीर मुआविया रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की जात पर ऐसे इलज़ामात लगाये हैं कि मुसलमान तो मुसलमान काफ़िर भी शरमा जाए। और उम्महातुल मूमिनीन हजरत आइशा सिद्दीका व हजरते हफ़सा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुमा को जुबान दराज़ करार दिया है

और दीन के बड़े-बड़े आलिम खास कर हजरते इमाम गज़ाली, हजरते इमाम रब्बानी मुजहिद अलफे सानी और हजरत शाह वलीउल्लाह मुहदिस देहलवी पर नुक़ता चीनी करके उन की बेअदबी की है । यहाँ तक कि कुर्आन करीम के बारे में लिखा कि वह नजात के लिए नहीं बल्कि हिदायत के लिए है ।— जिस का मतलब यह हुआ कि जो शरूस् नजात चाहे वह कोई और किताब तलाश करे । खुदा की पनाह

नोट :- अबुल आला मौदूदी की इन सारी गुस्ताखियों और बेअदबियों की तफ़सील किताबों के नाम और उनकी जिल्द व सफ़हा के हवालों के साथ जानने के लिए किताब "जमाअते इस्लामी" लेखक हजरत अल्लामह अरशदुल कादिरि क़िवला और किताब "दो भाई मौदूदी और

खुमैनी" को पढ़ें ।

इन गुस्ताखियों के इलावा मौदूदियों का अकीदा है कि कज़ा व कदर (तकदीर) पर ईमान लाना कोई ज़रूरी नहीं जैसा की उनकी किताब "मस्लए कज़ा व कदर" सफ़हा 13 पर लिखा है कि "मेरे नज़दीक मस्अलह कज़ा व कदर ईमान का जुज़ नहीं है । उसकी हैसियत एक मसअलह की है"

हालांकि कज़ा व कदर (तकदीर) का मस्अलह ईमान का जुज़ है इस लिए कि ईमान मुफ़स्सल में है "वलकदीर खैरिही व शररिही मिनल्लाहि तआला" यानी मैं इस बात पर ईमान लाया कि तकदीर की अच्छाई और बुराई अल्लाह की तरफ़ से है । और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तकदीर से इन्कार करने वालों को इस उम्मत का मजूस बताया ।

और फ़रिश्ते नूर से पैदा किए गये हैं । वह अल्लाह के मासूम बन्दे हैं हर किस्म के छोटे बड़े गुनाह से پاک हैं और वह लोग वही करते हैं जो अल्लाह का हुक्म होता है । उसके हुक्म के खिलाफ़ वह किसी हाल में कुछ नहीं करते । और मुशरिकों के देवी देवता उनके बुत और माबूद हैं जिनको वह पूजते हैं । क़ुर्आन के हुक्म के मोताबिक मुशरिकीन और उन के बुत जहन्नम के ईंधन हैं ।

मगर मौदूदियों का अकीदा है कि फ़रिश्ते और देवी देवता एक ही हैं जैसा कि उन की किताब "तजदीदे इहयायेदीन सफ़हा 14 पर लिखा है" कि इस्लामी

इस्तेलाह (बोल चाल) में जिनको फरिश्तह कहते हैं वह तकरीबन वही चीज़ है जिस को यूनान और हिन्दुस्तान वगैरा ममालिक के मुशरिकोन ने देवी देवता करार दिया है।

और मौदूदियों का अकीदा है कि तफ़सीर और हदीस के पुराने ज़खीरे सब बेकार हो गये जैसा कि “तनकीहात” सफ़हा 126 पर लिखा है कि “कुर्आन और सुन्नते रसूल की तालीम सब पर मुक़द्दम है लेकिन तफ़सीर व हदीस के पुराने ज़खीरों से नहीं”।

और तमाम अम्बिया व औलिया खुदाए तआला के यहाँ गुनहगारों के शफीअ और सिफारशी हैं और उन सब के आका रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसललन शफाअते कुबरा (बड़ी सिफारिश) के मरतबे से नवाज़े गये हैं लिहाज़ा इन से मदद माँगना और इन की ताज़ीम करना जाइज़ है और नज़्र व नियाज़ पेश करना भी जाइज़ है।

लेकिन मौदूदियों का अक़्कीदा है कि किसी को शफीअ और सिफारशी मान कर उनसे मदद माँगना उन को खुदा बनाना हो गया। यानी उन से मदद माँगने वाले मौदूदियों के नज़दीक मुशरिक हो गये जैसा कि उन की किताब “कुर्आन की चार बुनयादी इस्तेलाहें” सफ़हा 22 पर लिखा है कि “किसी को खुदा के यहाँ सिफारशी करार देकर उससे मददकी इल्तेजा करना और उस के साथ मरासिमे तअज़ीम व तकरीम बजालाना और नज़्र व नियाज़ पेश करना उस को इलाह (मअबूद और खुदा)

बनाना है ।

अल्लाह के नाम पर जानवर ज़बह करके उस का सवाब बुजुर्गों को पहुँचाना जाइज़ है और मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने कब्रों की ज़ियारत का हुक्म फ़रमाया और अपनी कब्रे अनवर की ज़ियारत करने वालों के लिए शफ़ाअत के वाजिब होने का मुजदा (खुशखबरी) सुनाया ।

लेकिन मौदूदियों का अक्कीदा है कि बुजुर्गाने दीन के मज़ारों की ज़ियारत करना मज़ारात का हज करना है और अल्लाह के नाम पर जानवर ज़बह करके बुजुर्गों को सवाब पहुँचना गैरुल्लाह के लिए कुर्बानी हो गई । और बुजुर्गों के मज़ार की ज़ियारत करना कत्ल और ज़िना (बदकारी) के गुनाह से बदतर है जैसा कि उन की किताब "तजदीदे इहयायेदीन" सफ़हा 93 पर लिखा कि "तुम गैइल्लाह के लिए कुर्बानियाँ करते हो और मदार साहब और सालार साहब की कब्रों का हज करते हो यह तुम्हारे बदतरीन अफ़आल (काम) हैं ।

और इसी किताब "तजदीदे इहयायेदीन" के सफ़हा 97 पर लिखा है कि "जो लोग हाजते तलब करने के लिए अजमेर या सालार मसजद की कब्र या ऐसे ही किसी दूसरे मकामात पर जाते हैं वह इतना बड़ा गुनाह करते हैं कि कत्ल और ज़िना (बदकारी) का गुनाह इस से कम है ।

और मौदूदियों का अक्कीदा है कि किसी गोशे में बैठ

कर अल्लाह अल्लाह करते रहना इबादत नहीं जैसा कि उनकी किताब "हकीकते सौम व सलात" सफ़हा 18 पर लिखा है कि "दुनिया को छोड़ कर कोनों और गोशों में जा बैठना और तसबीह हिलाना इबादत नहीं ।

सुलह कुल्ली

यह वह गिरोह है जो अहले सुलह कुल्ली व जमाअत के इलावा चकड़ालवी, कादियानी, राफज़ी (शीअह) खारिजी, बहावी देवबन्दी, वहावी गैर मुकल्लिद, तबलीगी जमाअत, मौदूदी जमाअत और नैचरी वगैरा सारे गुमराह व मुरतद् फिरको को भी हक समझता है, सब के यहाँ शादी विवाह करने और हर एक के पीछे नमाज पढ़ने को जाइज़ कहता है किसी को नारी और जहन्नमी नहीं ठहराता उस का अकीदा है कि कलमा व नमाज पढ़ने वाला हर मजहब जन्नती है । हालाँकि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की हदीस है कि मेरी उम्मत 73 फिरकों (गिरोहों) में बंट जाएगी उन में सिर्फ़ एक मजहब जन्नती होगा बाकी सब जहन्नमी होंगे । (तिर्मिजी, मिश्कात सफ़हा न. ३०)

अल्लाह की लानत

चकड़ालवियत कादियानियत राफ़जियत, वहावियत देवबन्दियत, और गैर मुकल्लिदीयत वगैरा अहले सुन्नत व जमाअत के खिलाफ जितने मजहब हैं इस ज़माना के ज़बरदस्त फितने हैं । हर पढ़े लिखे लोगों पर और आलिमों व पीरों पर खास कर लाजिम है कि वह अवामे अहले सुन्नत को इन फितनों के बारे में बतायें और

सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के हुक्म के मुताबिक उन के यहाँ उठने बैठने से रोकें और उनके यहाँ शादी विवाह करने से सख्ती से साथ मना करें । अगर वह ऐसा नहीं करेंगे और किसी मस्लहत से चुप रहेंगे तो अल्लाह तआला और उस के मलाइका (फरिश्तों) और सब लोगों की लानत के मुस्तहक होंगे और उन का कोई फर्ज व नफल कबूल न होगा जैसा कि हदीस शरीफ में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि "जब फितने जाहिर हों और हर तरफ बेदीनी फैलने लगे और ऐसे मौका पर आलिमे दीन अपना इल्म जाहिर न करे और अपनी किसी मस्लहत या फाइदा की लालच में चुप रहे । तो उस पर अल्लाह की और तमाम फरिश्तों की और सारे इन्सानों की लानत है । अल्लाह न उसका फर्ज कबूल करेगा और न उस की नफल (सवाइके मुहरिकह सफहा 2 अलमलफूज जिल्द 4 सफहा न. 4)

हुजूर के रास्ते पर नहीं

जो लोग कि मुसलमानों को फितनों में पड़ते हुए देख रहे हैं कि वह बदमजहबों और मुरतदों के यहाँ शादी विवाह कर के गुमराह व मुरतद हो रहे हैं और अल्लाह व रसूल जल्ल जलालुहु व सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाह के बेअदब बन रहे हैं मगर वह लोग कुदरत के बावजूद अवाम में मकबूलित हासिल करने, ज्यादा से ज्यादा आमदनी हाने या और किसी फाइदा के लिए चुप रहते हैं और ऐसी जबरदस्त बुराई कि जिस से लोग कुफ्र में पड़ जाते हैं नहीं रोकते वह बिला शुबहा हुजूर सय्यदे

आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रास्ते पर नहीं हैं जैसा कि तिरमिजी में हजरत इब्ने अब्बास रजियल्लाहु तआला अनहुमा से हदीस शरीफ रिवायत है कि "जो मुसलमान हमारे छोटों पर मेहरबानी न करे, हमारे बड़ों की ताजीम न करे, अच्छी बात का हुक्म न दे और बुरी बात से न रोके वह हमारे रास्ता पर नहीं (मिशकात शरीफ सफ़हा 423)

और ऐसे लोग नायबे रसूल नहीं सिर्फ नाम के आलिम हैं इसलिए कि रसूल लोगों को गुमराही व बदमजहबी से बचाने और उनको सही रास्ता पर चलाने की फिक्र में दिन रात लगा रहता है। लिहाजा जो आलिम उनके तरीके पर चले और उनका रास्ता इखतियार करे वही नायबे रसूल है वना दुनिया कमाने के लिए वह सिर्फ नाम का आलिम है।

सब से कमज़ोर ईमान वाला

अच्छी बात का हुक्म देना और बुरी बात से रोकना मुसलमानों पर वाजिब है जैसा कि हज़रत शेख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि "अच्छाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना वाजिब है इसपर उम्मत का इजमाअ (सहमति) है, (अशिअतुल्लमआत जिल्द 4 सफ़हा 173)

लिहाजा अगर कोई हाथ और जबान से बुराई न रोक सके और सिर्फ दिल से बुरा जाने तो वह सब से

कमजोर ईमान वाला है । जैसा कि मुस्लिम शरीफ में हज़रत अबूसईद खुदरी रजियल्लाहु तआला अन्हु से हदीस शरीफ रिवायत है कि सरकारे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि "जो शख्स कोई बात शरअ के खिलाफ देखे तो उसे अपने हाथ से रोक दे और अगर हाथ से रोकने की कुदरत न हो तो जुबान से मना करे । और अगर ज़बान से भी मना करने की कुदरत न हो तो दिल से बुरा जाने और यह सब से कमजोर ईमान है ।" (मिशकात शरीफ सफ़हा 436)

बुराई न रोकने पर अज़ाब

बहुत से मुसलमान इस बेवकूफी में पड़े हुए हैं कि अगर लोग बुरा काम कर रहे हैं तो वह उस का जवाब देंगे । हम से क्या गरज़ ? और यह सोच कर वह चुप रहते हैं कुछ नहीं बोलते । बल्कि कुछ लोग तो बुराई रोकने वाले के खिलाफ हो जाते हैं । और कहते हैं आप से क्या मतलब ? हालाँकि उस बुराई से रोकना सब लोगों पर लाज़िम है । अगर कुदरत के बावजूद नहीं रोकेंगे तो सब पर अज़ाब नाज़िल होगा । जैसा कि इब्ने अदी किनदी रजियल्लाहु तआला अन्हु से हदीस शरीफ रिवायत है कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि " अल्लाह तआला सब लोगों को बाज़ (कुछ) लोगों के अमल के सबब अज़ाब नहीं देता मगर जबकि वह अपने दरमियान बुरे काम होते हुए देखें और उसे रोकने की ताकत रखते हुए न

रोकें । अगर उन्होंने ऐसा किया तो खुदाये तआला आम और खास सब को अज़ाब देगा । (मिशकात शरीफ सफ़हा 438)

यानी अगर कुछ लोग कोई गुनाह करें तो उस के सबब खुदाये तआला दूसरो पर अज़ाब नहीं फरमाता लेकिन बुराई देख कर चुप रहना और उसे न मिटाना ऐसा गुनाह है कि उस के सबब बुराई करने वाले और चुप रहने वाले दोनों पर अज़ाब नाज़िल फरमाता है । बुराई करने वाले पर बुराई के सबब और चुप रहने वालों पर चुप रहने के सबब । और तिरमिज़ी शरीफ में हज़रत हुज़ैफा रज़ियल्लाहु तआल अन्हु से हदीस शरीफ रिवायत है कि नबीये अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया “कसम है उस ज्ञात की जिस के कब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है तुम ज़रूर अच्छी बातों का हुक्म करना और बुरे कामों से मना करते रहना । वरना जल्द ही अल्लाह तआला तुम पर अपने पास से अज़ाब भेज देगा । फिर तुम उस से दुआ करोगे तो तुम्हारी दुआ कबूल नहीं की जायेगी । (मिशकात शरीफ सफ़हा 436)

हज़रत शैख अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाह तआला अलैहि इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं “यानी दूसरे अज़ाब और मुसीबते दुआ से दूर हो सकती हैं लेकिन अच्छी बात का हुक्म देना और बुरी बात से रोकना छोड़ देने के सबब जो अज़ाब नाज़िल होगा वह दूर नहीं होगा और दुआ उस के बारे में कबूल न होगी ।” (अशिशतुललमआत जिल्द 4 सफ़हा न. 175)

और तिर्मिजी व इब्ने माजा की हदीस है हजरते अबूबकर सिद्दीक रजियल्लाहु तआला अन्हु ने फरमाया कि मैं ने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुये सुना कि "लोग जब कोई बुरा काम देखें और उस को न मिटायें तो जल्द ही खुदाये तआला उन सब को अपने अजाब मे मुत्तिला करे (डाले) गा।" (मिशकात शरीफ सफहा न. 436)

और अबू दाऊद व इब्ने माजा की हदीस है। हजरते जरीर इब्ने अब्दुल्लाह रिजयल्लाहु तआला अन्हु फरमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि "किसी कौम का कोई आदमी उन के दरमियान गुनाह करता हो और वह उसे रोकने की ताकत रखते हों मगर न रोकें तो खुदाये तआला उन सब पर अजाब भेजेगा इस से पहले कि वह मरें।" (मिशकात शरीफ सफहा 437)

हजरत शैख अब्दुल हक मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं कि "इस हदीस शरीफ से मालूम हुआ कि अच्छी बात के हुक्म देने और बुराई से रोकने को छोड़ देने के सबब दुनिया में भी अजाब होगा और अखिरत में भी। व खिलाफ दूसरे गुनाहों के कि दुनियाँ में उन पर अजाब नहीं। (अशितुल्लमआत जिल्द 4 सफहा 177)

बैहिकी शरीफ में हजरत जाबिर रजियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि सरकारे अकदस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया "खुदाये

तआला ने जिवरईल (एक फरिश्ता) अलैहिस्सलाम को हुक्म फरमाया कि फुलों शहर को जो ऐसा और ऐसा है उस के रहने वालों समेत उलट दो । जिवरईल अलैहिस्सलाम ने अर्ज किया ऐ मेरे परवरदिगार ! इन रहने वालों में तेरा फुलों बनदा भी है जिस ने एक मिनट भी तेरी ना फरमानी नहीं की है । तो अल्लाह तआला ने फरमाया मैं फिर हुक्म देता हूँ कि उस पर और कुल रहने वालों पर शहर को उलट दो इस लिए कि उस का चेहरा गुनाहों को देखकर मेरी खुशी के लिए एक मिनट भी नहीं बदला । (मिशकात शरीफ सफहान. 439)

हजारत शैख अब्दुल हक मुहदिस देहलवी बुखारी रजियल्लाहु तआला अन्हु इस हदीस शरीफ की शरह में लिखते हैं कि "गुनाहों को देखकर खुदाये तआला की खुशी के लिए चेहरा का रंग न बदलना बहुत बड़ा गुनाह है इसी लिए अल्लाह तआला ने उस नेक बन्दे पर अज्ञाब देने का हुक्म पहले फरमाया और गुनाह करने वालों पर अज्ञाब देने का हुक्म बाद में । (अशिअतुल्लमआत जिल्द 4 स. 183)

और किसी के चुप रहने पर जब कि लोग यह कहने लगे कि फुलों तो इतने बड़े आलिम और बुजुर्ग हैं मगर वह किसी को नहीं मना करते । एक आप ही हैं रोकने और मना करने वाले । क्या वह आलिम नहीं हैं । अगर यह बात गलत होती तो वह भी जरूर मना करते—इस सूरत में चुप रहने वाले और बुराई को देख कर न रोकने वाले पीर व मौलवी और ज्यादा अज्ञाब के लाइक होंगे ।

तरह तरह के फरेब (धोखे)

आज कल अहले सुन्नत व जमाअत के यहाँ जल से और कानफेनसे बहुत होती हैं जिनमें ज्यादा तकरीरें डामाई और रसमी होती हैं। ईमान के डाकू जिस रास्ते से सुन्नियों के घरों में धुस कर उनके ईमान पर डाका डाल रहे हैं और सुन्नियत को जबरदस्त नुकसान पहुँचा रहे हैं उस रास्ता को बन्द नहीं करते। यानी बदमजहबों के साथ उठने बैठने से नहीं रोकते और न उनके यहाँ शादी विवाह करने से मना करते हैं बल्कि बाज मौलवी और पीर खुद ही उन के यहाँ रिश्ता कर लेते हैं जिसे सुन्नी अवाम सनद बनाकर बदमजहबों के यहाँ शादी विवाह करते हैं और थोड़े दिनों में घर के घर गुमराह व बदमजहब हो जाते हैं।

इन हालात में अगर कहीं कोई आलिमेदीन उस बुराई के खिलाफ कुछ बोलता या लिखता है तो नसीहत कबूल करने की बजाय उस से दुश्मनी करते हैं और तरह तरह के फरेब से उस की हक बातों का असर खत्म कर देते हैं। लोगों को बहकाते हैं। न खुद अमल करते हैं और न दूसरों को अमल करने देते हैं।

कहीं काई उस की हक गोई को ऐब जूई करार देता है और उलटे उसी को गुनहगार ठहराता है। जबकि छुपे हुए ऐवों को खोजना ऐब जूई है। और जो बुराई खुल्लम खुल्ला की जाती हो उस के खिलाफ बोलना हक गोई है ऐब जूई नहीं।

और कुछ लोग कहते हैं कि यह गीबत है हालाँकि जो बुराई को ई खुल्लम खुल्ला करता है उस का लोगों में चरचा करना गीबत नहीं । फकीहे आजमे हिन्द हज़रत सदरुशशरीआ रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि "जो शख्स अलानिया (खुल्लम खुल्ला) बुरा काम करता हो और उस को इस बात की कोई परवा नहीं कि लोग उसे क्या कहेंगे तो उस शख्स की उसे बुरी हरकत का बयाना करना गीबत नहीं मगर उस की दूसरी बातें जो जाहिर नहीं हैं उन का जिक्र करना गीबत है । हदीस शरीफ में है कि जिस ने हया का हिजाब अपने चेहरे से हटा दिया उस की गीबत नहीं । (बहारे शरीअत हिस्सा 16 बयान गीबत बहवालए रहूलमुहतार)

और कुछ लोग कहते हैं कि वह उर्स में औरतों को आने से क्यों नहीं रोक पाते । यानी जब वह आलिम उर्स में औरतों को आने से रोकने पर कामियाब हो जाये गा तब वह बदमजहबों और मुरतदों से रिश्ता नहीं करे गें वनना उन के यहाँ वह बराबर शादी विवाह करते रहेंगे दीन और अक़ल पर रोना चाहिए ।

और कुछ लोग कहते हैं कि वह आलिम बड़े हक़ गो हैं तो आकर औरतो को मज़ार से हटायें । ऐ काश ! ऐसे हक़ गोई का माना जानते । और अगर जानते हैं तो जाहिल न बनते कि हक़ गोई का माना है हक़ बात कह देना उस के माना मज़ार से औरत हटाना नहीं है ।

और कुछ लोग यह कहते हुए शज़र आते हैं कि जब उस में खुद फुलों फुलों बुराई पाई जाती है तो वह दूसरों को बुराईयों से रोकने का हक़ नहीं रखता—ऐसे लोगों को

मालुम होना चाहिए कि उस पर दो चीजें वाजिब हैं। खुद बुराइयों से बचना और दूसरों से बचने के लिए कहना। तो एक वाजिब के छूटने से दूसरे वाजिब का छोड़ना जाइज़ नहीं - हज़रत शैख अब्दुलहक़ मुहद्दिस देहलवी बुखारी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि "अच्छी बात के करने का हुक्म देने के वाजिब होने में खुद हुक्म देने वाले का भी अमल करने वाला होना शर्त नहीं बल्कि बगैर अमल भी अच्छी बात का हुक्म देना जाइज़ है इस लिए कि अपने आप को अच्छी बात का हुक्म देना वाजिब है और दूसरे को अच्छी बात के करने का हुक्म देना दूसरा वाजिब है। अगर एक वाजिब छूट जाये तो दूसरे वाजिब को छोड़ना हरगिज़ जाइज़ न होगा। और जो कुर्आन मजीद पारा 29 में है कि "वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं हो।" तो अगर इसे अच्छी बात का हुक्म करने और बुरी बात से रोकने के बारे में मान भी लिया जाये तो अमल न करने पर डॉट फटकार है न कि कहने पर। (अशिशतुल्लमआत जिल्द 4 सफ़हा न. 173)

और फिर लिखते हैं कि दूसरों को अच्छी बात का हुक्म करना और बुराई से रोकना और खुद उस पर अमल न करना अज़ाब का सबब है लेकिन यह अज़ाब अमल न करने की वजह से है अच्छी बात का हुक्म देने और बुराई से रोकने की वजह से नहीं है। इस लिए कि अगर यह भी नहीं करेगा यानी अच्छी बात का हुक्म नहीं देगा और बुराई से नहीं रोकेगा तो दो वाजिब छोड़ने के सबब और ज्यादा अज़ाब के लाइक होगा। (अशिशतुल्लमआत जिल्द 4 सफ़हा 175)

फिर कोई अक्ल वाला यह बात हरगिज नहीं कहेगा मैं हक बात इस लिए नहीं मानूँगा कि उस का कहने वाला खुद इस पर नहीं चल रहा है। इस की मिसाल बिल्कुल ऐसी है जैसे कोई लोगों से तन्दुरुस्ती का तौर तरीका बयान करे और सुनने वाले देखें कि यह शख्स खुद तन्दुरुस्ती के तौर तरीके पर अमल न करने के सबब अपनी तन्दुरुस्ती बरबाद कर रहा है तो वह लोग यह नहीं कह सकते कि तुम खुद चूँकि इस तरीकों पर अमल न करने के सबब अपनी तन्दुरुस्ती खराब कर रहे हो इसलिए हम तन्दुरुस्ती के यह कायदे और कानून कबूल न करेंगे। अलबत्ता जिसे अक्ल से कोई हिस्सा न मिला हो वह ऐसी बात कह सकता है।

हजरत शैख सादी रहमतुल्लाहि तआला अलैहि लिखते हैं कि आलिम की बात दिल से सुनो अगर्चे वह खुद बे अमल हो और सोये हुए को सोया हुआ आदमी नहीं जगा सकता। मुखालिफ का यह कहना ग़लत है। आदमी को चाहिये कि अगर दीवार पर नसीहत लिखी तो उसे भी कबूल कर ले।

दुआ है कि अल्लाह तआला सारे मुसलमानों को अपने महबूब प्यारे मुस्तफा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और सहाबा और बुजुर्गों की सच्ची मुहब्बत अता फरमायें और उन के दुश्मनों से दूर रहने की तौफीक बख्शे। आमीन! बिजाहि हबीबि क सयइदिल मुरसलीन सलवातुल्लाहि तआला व सलामुहु अलैहि व अलैहिम अजमअीन।

जलालुद्दीन अहमद अमजदी

१२ रबीउल आखर १४१० हिजरी

१२ नवम्बर १९८६ ईसवी

★ अनवारुल हदीस ★

यह किताब फकीहे मिल्लत मुफती जलालुद्दीन अहमद अमजदी की अहम तरनीफ (लेख) है जिस का मोकद्दमा रईसुत्तहरीर हज़रत अल्लामा अर्शदुल कादिरी साहब क़िबला के क़लम का शाहकार है जो इल्मे हदीस पर अपनी जगह एक मुस्ताक़िल रेसाला है। यह एक सौ से ज़्यादा मज़मूनों पर १५४ अहादीस और ४७४ फ़िक़ही मस्लों का ज़खीरा है। जिस में हदीस, तफ़सीर फ़िक़ह, और वसूले फ़िक़ह वगैरह ७५ किताबों की अस्ल इबारतें दर्ज हैं। जिस में हदीस शरीफ की अस्ल अरबी इबारत को ज़ेर ज़बर वगैरह और उर्दू तरजमा के साथ लिखा गया है। और जगह जगह हदीस शरीफ की शरह करने वाले हज़रात की बातें नक़ल की गई हैं।

जिस में अकीदे, शिर्क ब कुफ़्र, सुन्नत व बिदअत, जन्नत व दोज़ख, वज़ु और ग़ुस्ल वगैरह ११३ मज़मूनों पर हदीसों और इमामों की बातें जमा की गई हैं। बेहतरीन कागज़ फोटू आफ़सेट छपाई ५२० सफ़हात बड़ा साइज़ जिल्द पर रंगीन खूबसूरत कवर.....

उर्दू- हिन्दी

अनवारे शरीअत (अच्छी नमाज़)

इस किताब को फकीहे मिल्लत मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद साहब किबला अमजदी ने बीस साला फतवा नवेसी के तजरेबा के बाद लिखी है जो ७७ उनवान पर दीनी मालूमात का खज़ाना है। मुखतसर होने के साथ इतनी मुफीद किताब आज तक निंगाह से नही गुज़री-इस किताब के कुछ उनवानात इस तरह हैं।

अल्लाह तआला के बारे में अकीदा, फरिशते, खुदाए तआला की किताबें, रसूल और नबी, हमारे नबी अलैहिस्सलाम, कियामत का बयान, मरने के बाद जिन्दा होना, शिर्क व कुफ्र और बिदअत का बयान, बजू और गुस्ल का बयान, तयम्मुम का बयान, इस्तिनजा का बयान, पानी और जानवर के झूटे का बयान, कूर्यें का बयान, नजासत का बयान, हैज़ व नेफास और जनाबत का बयान, नमाज़ के वक्तों का बयान, वजू और नमाज़ के तरीके वगैरा वगैरा खुलासा यह कि फकीहे मिल्लत किबला ने दरया को कोज़ा में बन्द कर दिया है। फोटू आफसेट छपाई-बेहतरीन कागज़, रूब सूरत चार रंग का टाइटल.....

उर्दू - हिन्दी

मोहक्किकाना फैसला

हज़रत फकीहे मिल्लत मुफ्ती जलालुद्दीन अहमद साहब क़िबला अमजदी की यह किताब बहुत ज़्यादा मक़बूल है जिस में हज़रत ने आठ इखतेलाकी मस्ल्लों का मोतबर किताबों के हवालों से फैसला फरमाया है जिस के मज़ामीन यह हैं।

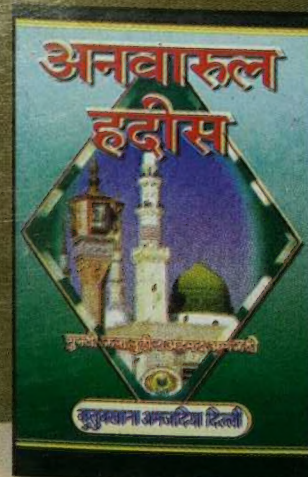
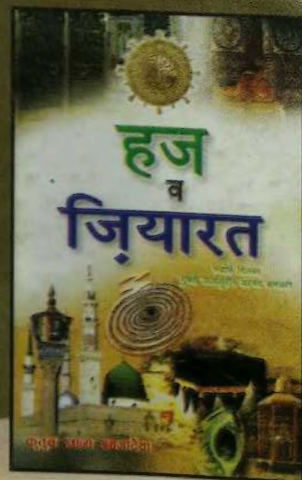
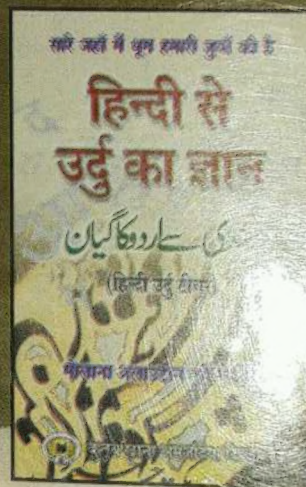
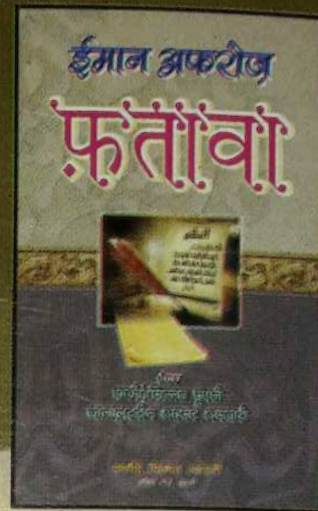
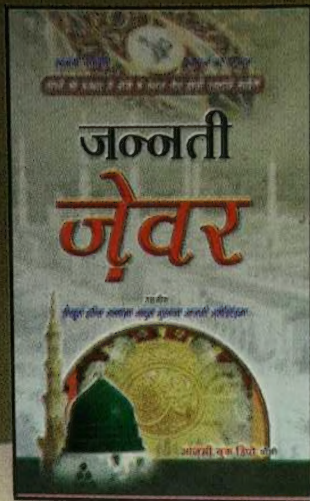
बिदअत बिदअत की पाँच किस्में, बिदअतों का र वाज, सलात व सलाम, अँगूठा चुमना, औलियाए -कैराम की नज़, तकबीर के वक्त बैठना, खुतबा की अज़ान मारिजद के बाहर सुन्नत है। बुज़रुगों के हाथ पाँव चूमना ईसाले सवाब और फातिहा

इस रेसाला को पढ़ने के बाद हर इन्साफ पसन्द ऊपर लिखे हुए मस्ल्लों को तसलीम किए बेगैर नहीं रहता-फोटू आफसेट छपाई रंगीन टाइटल

उर्दू -हिन्दी

किताब मिलने के पते

- ★ न्यू सिलवर बुक एजेंसी मोहम्मद अली रोड,
भिन्डी बाजार, मुम्बई न0 3
- ★ इकरा बुक डिपो मोहम्मद अली रोड, भिन्डी
बाजार, मुंबई न0 3
- ★ नाज़ बुक डिपो मोहम्मद अली रोड, भिन्डी बाज़ार,
मुंबई न03
- ★ नूरी कुतुब खाना. बड़ वाली चौकी, इन्दौर
(ऐम0पी0)
- ★ मोहम्मद इसराफील बुक सेलर, गली लंगर खाना,
अजमेर शरीफ
- ★ अब्दुरहीम अहमद जमाल बुक सेलर उर्दू बाज़ार
गोरखपुर (यू0पी0)
- ★ कादिरी किताब घर इस्लाममिया मार्केट नौ महला
बरेली
- ★ फारूकिया बुक डिपो 422/सी, मटिया महल, जामा
मस्जिद, दिल्ली-6
- ★ रज़वी किताब घर 423, मटिया महल, जामा
मस्जिद, दिल्ली-6
- ★ मकतबा जामे नूर 422, मटिया महल, जामा
मस्जिद, दिल्ली-6
- ★ मकतबा इमामे आजम 425, मटिया महल, जामा
मस्जिद, दिल्ली-6



ISBN 81-89087-32-0



9 788189 087326



**KUTUB KHANA
AMJADIA**

425/7, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6

Ph.: 011-32484831, Telefax : 011-23243187

e-mail: kkamjadia@yahoo.co.uk

www.kutubkhanaamjadia.com • info@kutubkhanaamjadia.com